इन्टरव्यू ३८

प्र: आपका नाम क्या है ?
ज: मेरा नाम मो.बसीर है।

प्र: आपकी उम्र कितनी है ?
ज: मेरी उम्र 28 साल है।

प्र: कितने साल से बुनकारी कर रहे है ?
ज: 12 साल हो गए।

प्र: ये आपका करघा है ?
ज: जी हां।

प्र: और भी करघे हैं ?
ज: हां और भी और कारीगर से भी कराते हैं।

प्र: कितने करघे हैं ?
ज: 6 हैं।

प्र: 6 वों आपके है की भाइयों के भी हैं ?
ज: हां भाइयों के भी हैं।

प्र: सभी पर अपने लोग हैं या मजदूर भी है ?
ज: मजदूर भी हैं।

प्र: कितने पर मजदूर है ?
ज: फिलहाल तो एक ही है।

प्र: खाना-पीना सबका साथ में होता है ?
ज: हां, भाई लोग का साथ में होता है, चाचा लोगों का अलग है।

प्र: इसलिए पूछ रहे थे कि खर्च साथ में चलता है क्या ?
ज: अच्छा।

प्र: एक करघे से एक साड़ी बनाने में कितना समय लगाता है ?
ज: लोकल साड़ी में एक हफ्ता लगता है।

प्र: लोकल मतलब ?
ज: 500 से लेकर 5000 तब का साड़ी रहता है तो जिसमें कम दाम रहेगा वो कम टाइम लेगा। ये साड़ी जो बिन रहे हैं वो एक हफ्ते में बनेगा और इसकी मजदूरी 5-6 सौ रुपया होगा। एक साड़ी का तीन चार महीना भी लग सकता है।

प्र: इसमें जो सामान लगाये हैं वो कितने का होगा ?
ज: एक हजार का मेटेरियल लगेगा 500 रुपया मजदूरी होगा।

प्र: तानी-बाना आपका है कि किराये पर है ?
ज: तानी-बाना किराये पर नहीं मिलता खुद से खरीदना होता है।

प्र: कई लोग गृहस्ता से लेते है ?
ज: नहीं तो वो भी किराया नहीं है वो लाकर बिनते है तो उसका उनको मजदूरी मिलता है।

प्र: आपका अपना है ?

ज: हां लेकिन सारा काम अपना नहीं है कुछ मजदूरी का भी है।

प्र: इसका आपको कितना मिलेगा ?
ज: मजदूरी के 500 मिलेगा एक हफ्ता में 500।

प्र: साड़ी बिकेगा कितने में ?
ज: ये तो बेचने वाला चाहे जिनता प्रॉफिट रखलें 500 रखें 200 रखें । हमको तो मजदूरी मिला केवल बस हमारा हो गया। उसका वो जाने।

प्र: करघे उसके घटे हैं की बढ़े हैं ?
ज: करघे दिन ब दिन घट ही रहे हैं।

प्र: पहले कितने करघे थे आपके पास ?
ज: 20 थे अब 6 हैं।

प्र: घट क्यों गए ?
ज: घट गए क्योंकि कोई सुविधा तो है नही रेशम बाहर से आता है। पुलिस वाले भी कभी कभी पकड़ लेते हैं उसपर से मंहगाई बढ़ती जाती है रेशम की। कभी काल हो गया की घट गया नहीं तो हमेशा बढ़ता ही है। साड़ी का दाम नहीं बढ़ता मजदूरी घटती जाती है। मैटेरियल का दाम बढ़ जायेगा लेकिन साड़ी का दाम नहीं बढ़ेगा।

प्र: ये स्थिति हमेशा से भी या अभी हुई ?
ज: पहले नहीं था अब कुछ सालों से हो गया है।

प्र: लगभग कितने सालों से ?
ज: करीबन 6-7 साल से।

प्र: रेशम का दाम लगातार बढ़ता जा रहा है ?
ज: हां।

प्र: कारण क्या है कि साड़ी का दाम नहीं बढ़ रहा है ?
ज: सरकार इस पर कर लगाती जाती है तो रेशम का दाम बढ़ता जाता है। बाहर से माल आता है तो इस टेक्स ज्यादे लगा देती है। यहां हम लोग के खरीदते-खरीदते और मंहगा हो जाता है।

प्र: रेशम पर कोई छूट नहीं मिलती जैसे किसानों को मिलती है ?
ज: नहीं, कोई छूट नहीं किसानों को तो कार्ड नहीं दिया जाता कि गरीब है।

प्र: और किसी तरही कि सुविधा जो सरकार ने दी हो ?
ज: हमारे काम से सरकार को कोई लेना देना नहीं है। कहती बहुत कुछ है लेकिन देती कुछ नहीं।

प्र: बैंक से लोन की सुविधा का पता है ?

ज: बैंक लोन करघे पर नहीं देगा ना। लोन लेने जायेंगे वो कहेगा मकान का कागज जमा करो तो लोन देंगे। अगर हम कहेंगे की कारखाना लगाना है तो लोन नहीं देगा कहेगा घर का कागज लाओ तो ऐसा लोन से क्या फायदा उसपर ब्याज भी देना पड़ेगा।

प्र: समिति है कोई जिससे मदद मिलती हो ?
ज: हम लोगों के यहां तो कोई समिति नहीं ह।

प्र: किसी भी समिति के बारे में नहीं जानते ?
ज: कभी समिति वाले आये ही नहीं हमारे पास तो क्या जाने।

प्र: लेकिन है कि नही पता है ?
ज: नहीं पता।

प्र: आप लोग समिति बनाने का नहीं सोचे ?
ज: समिति क्या बनाए।

प्र: उससे कुछ शायद कुछ फायदे हो जाए अगर कुछ लोग मिलकर बनाए तो शायद पता नहीं सुना है ऐसा ?
ज: समिति बनाने के लए वक्त देना होगा, हर जगह घूम घम कर देखना होगा कि कौन क्या कर रहा है। अब किसी के पास इतना टाइम तो है नहीं। मजदूरी करते करते एक हफ्ता में 500 रुपया मिल जाता है उसमे अपना घर चलायेगा कि मुहल्ले की समिति को देखेगा। इसलिए यहां समिति की कोई व्यवस्था नहीं है।

प्र: पुलिस वाले कैसे तंग करते हैं आप बता रहे थे ?
ज: नहीं, जैसे बाहर से रेशम आता है तो पुलिस पूछते है किसका है क्यों है, करके परेशान करते हैं।

प्र: आप लोग तो दुकान से ना माल लेते हैं ?
ज: हां, लेकिन रेशम इसीलिए ना मंहगा बिकता है कि पकड़ लिया गया माल वो अपना दिखा दिए सरकार के खाते में अगर रेशम सस्ता भी आया तो ये लोग मंहगा हो जाता है, वहां पर।

प्र: आप मार्केट से खरीदे तो पुलिस वालों को क्या प्राब्लेम ?
ज: नहीं पुलिस वाले हमें नहीं कहते पेपर में पढ़ते नहीं है कस्टम वाले रेशम पकड़ा....

प्र: आप करघा बढ़ाने को सोच रहे हैं ?
ज: अभी तो जितना है उसी में खुश हैं।

प्र: इतने में खर्च चल जाता है ?
ज: अरे अपनी परेशानी किसी से सुनाने से क्या फायदा कोई आकर पूरा तो करेगा नहीं। जितने में हैं उसमें बहुत खुश है।